


---

Jaya Jagadisha Hare Arati

——  
जय जगदीश हरे आरार्तिक्यम्

——  
Document Information



---

Text title : jaya jagadIsha hare AratI

File name : jayajagadIshaAratI.itx

Category : vishhnu, AratI, aShTaka

Location : doc\_vishhnu

Proofread by : Paresh Panditrao

Description/comments : Sanskrit translation of Hindi Arati Jaya Jagadisha Hare

Latest update : October 7, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.


---

May 20, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



——  
जय जगदीश हरे आरार्तिक्वम्



ॐ जय जगदीश हरे भक्तिजनेड्यविभो त्वयि  
मम रतिरस्तु परे ॥ (ध्रुवपदम्) ॥

यस्त्वां ध्यायति धन्यः सन्ततमनुरागी ।  
स भवति जनिमृतिरहितः श्रेयःफलभागी ॥ १ ॥

त्वं जननी जनको मे त्वं विपदुद्धर्ता ।  
त्वं शरणः शरणप्रद सकलैनोहर्ता ॥ २ ॥

पूर्णस्त्वं परमात्मन् सर्वान्तर्यामी ।  
ब्रह्मपरमेश्वरभर्तः त्वं सर्वस्वामी ॥ ३ ॥

त्वं पालयिता पातस्त्वं करुणासिन्धुः ।  
दुर्वृत्तेरपि जन्तोस्त्वमकारणबन्धुः ॥ ४ ॥

सर्वांगोचर एकः सकलासुगणेशः ।  
प्राप्यः केन कुमतिना मयि का परमेशः ॥ ५ ॥

दीनोद्धारः प्रभुरसि सर्वार्त्युद्धर्ता ।  
पतितोद्धार्युत्थाप्यः स्नेहमसत्कर्ता ॥ ६ ॥

श्रौतिं स्मृतिमुज्जीवय सञ्जीवय धर्मम् ।  
विद्यावृद्धिं विरचय शमयाप्युपधर्मम् ॥ ७ ॥

विषयविकारं शमयांहः संहर विष्णो ।  
श्रद्धाभक्ती सेवां दृढय सतां विष्णो ॥ ८ ॥

ॐ जय जगदीश हरे ।

*Jaya Jagadisha Hare Arati*

pdf was typeset on May 20, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

